शिष्यता के अनिवार्य तत्व

मसीही जीवन के लिए अनिवार्य तत्व
अगुवों की मार्गदर्शिका

परमेश्वर एवं आत्मिक क्षेत्र
अध्याय 1: बुराई का मूल

परिचय

परमेश्वर एंव आत्मिक क्षेत्र नामक यह अध्याय शिष्यता के अनिवार्य तत्व मॉड्यूल का एक भाग है। अध्यायों की यह श्रृंखला आत्मिक जगत की वास्तविकता का मूल्याँकन करती है–जिसमें भली और बुरी दोनों शक्तियां वास करती हैं। इस अध्याय में बुराई के मूल, शैतान के दण्ड, आत्मिक जगत की वास्तविकता और दैनिक जीवन में पाये जाने वाले दृढ़ गढ़ों, परमेश्वर द्वारा प्रदान किये हुए हथियारों के बारे में, शैतान के खिलाफ परमेश्वर की युद्ध रणनीति, सारी बातों पर परमेश्वर के नियन्त्रण और आलौकिक तरीकों के बारे में बताया गया है जिसके द्वारा परमेश्वर अपने लोगों से बातचीत करते हैं।

अपेक्षित श्रोतागण

इन अध्यायों के लिए अपेक्षित श्रोतागण नये मसीही या वे लोग हैं जो मसीही उद्धार की बुनियादी शिक्षाओं पर विचार या पुनःविचार करना चाहते हैं। जो लोग सुसमाचार प्रचार करने या किसी को शिक्षा देने की तैयारी कर रहे हैं उनके लिए इस अध्याय में की गयी चर्चा काफी लाभदायक साबित हो सकती है। यह अध्याय उम्मीद करता है कि प्रतिभागियों ने यीशु को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण कर लिया है और वे मसीहीयत के बारे में और अधिक जानना चाहते हैं।

अगुवों की मार्गदर्शिका को अगुवे के रूप में आपकी तैयारी कराने में सहायता करने के लिये तैयार किया गया है। इन अध्यायों की रूपरेखा को www.dehindi.org पर प्राप्त "शिष्यता के अनिवार्य तत्व की अन्य सामग्री" के साथ उपयोग किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

परमेश्वर एवं आत्मिक क्षेत्र

अध्याय 1 : बुराई का मूल

उद्देश्य

इस अध्याय का उद्देश्य विश्वासियों को यह समझने में सहायता करना है कि बुराई कहाँ से आती है और यह हमें कैसे प्रभावित करती है।

अगुवों की टिप्पणी

एक सामान्य समस्या जिससे लोग लड़ते हैं वह है पाप की समस्या। यह कहाँ से आती है? क्यों यह हर जगह है? मेरे चारों ओर की बुराई से मैं कैसे बचूँ? परमेश्वर परिपूर्ण होते हुए भी कैसे बुराई को अनुमति दे सकते हैं? इस अध्याय का केन्द्र इस संसार में बुराई की उत्पत्ति है, विषेश रूप से अदन की वाटिका की घटनाएं। जबकि प्रतिभागियों को शायद यह एक परिचित कहानी लग सकती है, इस बात की समीक्षा करना महत्वपूर्ण है कि कैसे पाप ने इस संसार में प्रवेश किया और कैसे हमने आदम से एक पापी स्वभाव प्राप्त किया। यह समझना महत्वपूर्ण है कि हमें आदम के पापों के कारण नहीं बल्कि हमारे खुद के पापों के कारण दण्ड मिला है। इस सत्य पर ध्यान दें कि इस संसार में बुराई से ज़्यादा शक्तिशाली परमेश्वर हैं, और अगर वे परमेश्वर से सम्बन्ध रखते हैं तो उन्हें डरने की आवश्यकता नहीं है।

परिचय

समूह से पूछने के लिए निम्नलिखित प्रश्नों में से दो या तीन प्रश्नों का चुनाव करें।

- क्या आपसे कभी किसी ने पूछा है, "अगर परमेश्वर भले हैं, तो बुराई क्यों है"? आप उस प्रश्न की प्रतिक्रिया में क्या कहेंगे?
- शैतान और उसके शक्तियों के बारे में आप क्या समझते हैं?
- जब आप अदन की वाटिका के विषय में सोचते हैं, तब कैसे आप उसकी तस्वीर बनाते हैं?
- शैतान, परमेश्वर की बनाई हुई चीज़ों को नष्ट करना चाहता है? क्यों शैतान ने इस संसार को नष्ट करने की शुरूआत के लिये एक साधारण झूठ चुना?
- आपके चारों ओर के संसार में कौन सी कुछ ऐसी समस्याएं है जो बुराई और पाप के कारण होती हैं?
- हम ऐसा क्या कर सकते हैं जिससे यह निश्चित हो जाए कि परमेश्वर हम पर शासन करते हैं न कि हमारी पाप से भरी हुई इच्छाएं?

अध्ययन

सिखाएं

- **एक सिद्ध स्थान:** बाइबल साफ रूप से हमें बताती है कि जब परमेश्वर ने संसार और उसमें हर चीज़ की सृष्टि की, तब वह परिपूर्ण थी। अदन की कल्पना कीजिए, वह वाटिका जहाँ आदम और हव्वा को रहना था। निश्चय ही वह बहुत सुन्दर स्थान रहा होगा! और उससे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक बात यह है, कि उनका परमेश्वर के साथ एक ऐसा गहरा आत्मिक सम्बन्ध था जो कि पाप से भ्रष्ट नहीं था।

  - परमेश्वर की सृष्टि में आत्मिक जीव थे – स्वर्गदूत, जो कि भले थे जब परमेश्वर ने उन्हें बनाया था।

  - परमेश्वर ने पृथ्वी की सृष्टि पाँच दिनों में की, और छठे दिन उन्होंने पुरूष और स्त्री को बनाया। परमेश्वर ने मनुष्य के लिए अपनी सृष्टि पर शासन करने की योजना बनाई (उत्पत्ति 1:26) ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने (परमेश्वर) समस्त सृष्टि के ऊपर शासन किया (भजन संहिता 103:19)।

- **तो क्या हुआ?** बाइबल हमें बताती है कि, इस परिपूर्ण सृष्टि की शुरूआत के कुछ समय बाद, परमेश्वर के द्वारा बनाए गए कुछ स्वर्गदूतों ने उनके विरूद्ध विद्रोह किया। हमारे पास उनके मुखिया के लिए नाम है, शैतान।

  - **स्वर्गदूतों का गिरना:** उन्हें स्वतंत्र इच्छा और हमारे जैसे चुनाव के साथ बनाया गया था, और उन्होंने परमेश्वर की स्तुति करने को नहीं चुना। (2 पतरस 2:4; यहूदा 1:6)।

  - **शैतान का अहंकार :** यशायाह 14, बेबीलोन के राजा पर दण्ड की घाषिणा करता है, परन्तु 12–14 में यह प्रतीत होता है कि उस राजा का उल्लेख करने के लिए यह बहुत कठोर भाषा का इस्तेमाल किया गया है। काफी लोग विश्वास करते हैं कि यह अनुच्छेद शैतान के गिरने को दर्शाता है जो "...परमेश्वर की तरह सबसे महान" बनने की इच्छा रखता था। उसके अहंकार के कारण उसने परमेश्वर के अधिकार के विरूद्ध विद्रोह किया और स्वर्ग छोड़ा। परमेश्वर ने शैतान को बुरा होने के लिए नहीं बनाया – उसने यह मार्ग चुना।

  - **झूठों का पिता:** परमेश्वर, जो बुराई नहीं सह सकते, उन्होंने शैतान को स्वर्ग के बाहर फेंक दिया। फिर शैतान ने परमेश्वर की सृष्टि को नष्ट करने के लिए, परमेश्वर की रचना को उनके विरूद्ध उकसाने की योजना बनाई। शैतान पहला था जिसने पाप किया, न कि वे लोग जिन्हें परमेश्वर ने बनाया (यूहन्ना 8:44; 1यूहन्ना 3:8)।

- **शैतान की योजना:** हमें शैतान की मनसा के बारे में नही बताया गया, पर यह साफ है कि वो शुरूआत से ही मानव जाति के विरूद्ध था। शैतान बुराई का मूल है और वह आदम और हव्वा के पास पाप लेकर आया।

  - **आदम और हव्वा:** आदम और हव्वा को सभी चीज़ों के ऊपर शासन दिया गया था। आदम ने जानवरों का नाम रखा, और वे दोनों वाटिका के पौधों की देखभाल करते और उसमें से खाते थे। सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण यह है कि परमेश्वर के साथ उनका एक सिद्ध सम्बन्ध था।

    - उत्पत्ति 1:26–31
    - उत्पत्ति 2:15, 19–23

  - **आज्ञा और झूठ:** परमेश्वर ने आदम और हव्वा को केवल एक आज्ञा दी। वे वाटिका के किसी भी वृक्ष का फल खा सकते थे, पर भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष में से नहीं। अगर वे ऐसा करते, वे मर जाते। शैतान उनके सामने साँप के रूप में प्रकट हुआ और उन्हें सुझाव दिया कि परमेश्वर की आज्ञा झूठी थी, और वे निश्चय ही नहीं मरेंगे, बल्कि उनकी आँखें सत्य के लिए खुल जायेंगी। जब उन्होंने उस वृक्ष का फल खाया, वे भले और बुरे से अवगत हो गये और वे अपने किये कामों पर लज्जित थे।

    - उत्पत्ति 2:16–17
    - उत्पत्ति 3:6–7

  - **घातक परिणाम:** बिल्कुल, परमेश्वर, निश्चय उनके पाप के बारे में जानते थे। जब उनका सामना परमेश्वर से हुआ, आदम ने हव्वा को दोष दिया और हव्वा ने साँप को दोष दिया। आज्ञा न मानने के दण्ड के तौर पर, और जीवन के

वृक्ष के फल को खाने से दूर रखने के लिए, आदम और हव्वा को वाटिका से बाहर भेज दिया गया। शैतान ने जो झूठ बोला उसके ये परिणाम थें:

- सॉंप हमेश शापित रहेगें, और स्त्रियों और उनके बीच बैर रहेगा।
- बच्चे को जन्म देने में स्त्रियों को पीड़ा होगी।
- पुरूषों को कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी, और अपने भोजन के लिए कार्य करना पड़ेगा।
- पुरूषों और स्त्रियों दोनों के ही दिनों का अन्त होगा, और उनकी मृत्यु होगी।

➢ **तीन अलगाव:** मृत्यु, जो परमेश्वर ने आदम और हव्वा के पापों के लिए एक दंड के तौर पर घोषित की वह उस श्राप का ही भाग है। रोमियों 5:12 बताता है कि हम सभी इस पापी दशा में हैं और तीन अलगाव का सामना करते हैं:

- **हम परमेश्वर से अलग हो जाते हैं –** जब भी हम पाप करते है, यह हम में से हर एक के साथ होता है (यशायाह 59:2)।
- **हम दूसरों से अलग हो जाते हैं –** जब लोग एक दूसरे के विरूद्ध पाप करते हैं, पाप उनके बीच अलगाव उत्पन्न करता है (उत्पत्ति 3:15; यहेजकेल 35:5–6)।
- **हम अपने उद्देश्य से अलग हो जाते हैं –** हम जिस उद्देश्य के लिए बनाए गए थे हम उसकी समझ खो देते हैं (प्रेरितो के काम 26:18)।

❖ **मानव जाति के लिए परमेश्वर की जारी रहने वाली योजना –** परमेश्वर ने जिन लोगों प्रेम किया था वह उनसे कभी अलग रहने के इच्छुक नहीं थे। अनन्त काल तक परमेश्वर से अलग होकर पापी दशा में जीने की कल्पना करके देखिए ! इस तरह देखे तो शाप भी एक आशीष है। अपने पुत्र, प्रभु यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर की योजना अपने लोगों को अपने पास वापस लाने की थी।

➢ **परमेश्वर ने हार नहीं मानी!** परमेश्वर ने अपनी सृष्टि की ओर से मुँह नहीं फेरा। शैतान की शक्ति और प्रभाव के तले हम पाप के दास थे। हमें वापस जीतने के लिए परमेश्वर ने बुराई के विरूद्ध युद्ध करना शुरू कर दिया (रोमियों 6:17–18)!

➢ **परमेश्वर की अनन्त योजना:** परमेश्वर ने अपने पुत्र, प्रभु यीशु को हमारे स्थान पर मरने के लिए भेजा। सिर्फ प्रभु यीशु ही हमारे पापों के दंड की पूर्ति कर सकते थे क्योंकि वे अपरिमित रूप से निंदोष हैं। (रोमियों 5:8; 1 पतरस 2:24)

❖ **प्रार्थना का उद्देश्य:** इस संसार में शैतान को अधिक सामर्थ्य प्राप्त करने से रोकने के लिए और बुराई से लड़ने के लिए परमेश्वर एक सेना बुला रहे हैं। हम परमेश्वर की आत्मिक सेना में जुड़ सकते हैं! प्रार्थना हमारा सबसे शक्तिशाली हथियार है।

➢ **शैतान से बचने के लिए प्रार्थना करें:** हमें हमारे लिए प्रार्थना में बने रहना चाहिए कि हम लोभ में न पड़ें, वरन शैतान की योजनाओं के प्रति बुद्धिमान रहें और परमेश्वर से सामर्थ्य माँगें (मत्ती 6:13; इफिसियों 6:11)।

➢ **दूसरों के लिए प्रार्थना करें:** जो लोग पाप के द्वारा जकड़े जा चुके हैं हम उनके लिए निवेदन करने में सक्षम हैं, कि वे मुक्त हो सकें। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि उनके हृदय परमेश्वर की ओर फिरें। (इफिसियों 6:18)

➢ **प्रार्थना हीनता पाप है:** जिस दिन हम प्रार्थना नहीं करते , उस दिन हम यह कह रहें होते हैं, "कि आज मुझे परमेश्वर की ज़रूरत नहीं है।" और यही बातो आदम और हव्वा अदन की वाटिका में अपने कार्यों के द्वारा कह रहे थे। परमेश्वर को अस्वीकार करने से मृत्यु, विनाश, अलगाव उत्पन्न होता है, और यह शैतान को एक आधार देता है। प्रार्थना से पूर्ण और सतर्क रहें क्योंकि हम युद्ध में हैं (इफिसियों 6:12–13)!

चर्चा

- हम प्रतिदिन कौन से निर्णय लेते हैं जो हमें परमेश्वर से अलग कर सकते हैं?
- दूसरों के साथ हमारे सम्बन्धों को पाप कैसे हानि पहुँचाता है? क्या कोई ऐसा पाप है जिसके कारण मृत्यु, विनाश, और अलगाव उत्पन्न नहीं होते?
- हम शैतान के विरूद्ध परमेश्वर के युद्ध में कौन सी भूमिका निभाते हैं? प्रार्थना क्यों महत्वपूर्ण है?
- मृत्यु का शाप किस तरह से परमेश्वर की एक आशीष भी था? अगर हमें पापी दशा में रहने की और हमेशा जीने की अनुमति दी गयी होती, तो क्या नहीं हुआ होता?
- इस अध्याय के परिणाम के तौर पर इस हफ्ते आप अपने जीवन में कौन से बदलाव लाना चाहते हैं?

प्रार्थना

पहले भजन संहिता 32:1-7 पढ़ते हुए, साथ मिलकर छोटे समूहों में प्रार्थना करें। प्रतिभागियों को शांतिपूर्वक परमेश्वर के सामने अपने पाप स्वीकार करते हुए, अपने पापी स्वभाव के बारे में सोचते हुए, और फिर एक दूसरे के लिए प्रार्थना करते हुए समय व्यतीत करने दें। भले ही वे आत्मिक युद्ध में हैं, प्रार्थना करें कि वे लोभ में न पड़ें। प्रार्थना करें कि प्रत्येक प्रतिभागी स्पष्ट रूप से अपना स्वार्थीपन और अहंकार देख सके, और यह कि वे प्रतिदिन अपने जीवनों में परमेश्वर की इच्छा को स्वीकार करे। प्रार्थना करें कि वे अपनी प्रार्थना में सावधान रहें, और भयभीत न हों, और अपने पूरे हृदय से परमेश्वर पर विश्वास रखें।